Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

भारत में शहरीकरण और प्रवासन की समस्या का अध्ययन

डॉ. बी.के. जैन
भूगोल विभाग प्रमुख
एम.बी.पटेल महाविद्यालय, सालेकसा,
(गोंदिया)
bjain3284@gmail.com

प्रस्तावना :–

शहरीकरण की प्रक्रिया का शहरों पर सीधा असर पड़ता है। इस संबंध में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया लगातार महत्वपूर्ण होती जा रही है। प्राचीन काल से शहरों का निर्माण किया गया है। गिस्ट और हैल्बर्ट के अनुसार, शहर मानव संस्कृति के रूप में प्राचीन हैं। औद्योगिक क्रांति के बाद, पश्चिमी दुनिया में सभ्यता की प्रक्रिया शुरू हुई। सभ्यता तब दुनिया के अन्य देशों में शुरू हुई। इस अर्थ में संचार के साधनों के विकास के बाद प्रक्रिया शुरू हुई। वर्तमान में विकासशील देशों के कई शहरों में उद्योग स्थापित किए जा रहे हैं। आर्थिक विकास के बाद, लोगों के शहर में आने की प्रवृत्ति बढ़ जाती है। इससे शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या के अनुपात में वृद्धि हुई है।

शहरीकरण किसी विशेष क्षेत्र में कुल आबादी में से शहरी क्षेत्र में रहने वाली आबादी का अनुपात है। किसी देश का विकास सभ्यता पर निर्भर करता है। शहरों के विकास का मतलब देश का विकास है। भारत में सभ्यता हाल के दिनों में लगातार बढ़ रही है। जनसंख्या प्रवास शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या में वृद्धि कर रहा है। 1991 से 2001 के बीच, भारत में 9.76 करोड़ की आबादी थी। उन स्थानों पर नागरिकों का एक बड़ा प्रवास है। जहां बुनियादी सुविधांए अधिक उपलब्ध है। वर्तमान में भारत के शहरीकरण और प्रवासन की दिशा कैसी है ? भारत के शहरीकरण और प्रवासन संबन्धित नीति के प्रभाव क्या है? भारत के शहरीकरण और प्रवासन की दिशा में केसे परिवर्तन हो रहा है ? भारत के शहरीकरण और प्रवासन में गैर–अपेक्षित वृद्धि के क्या कारण है ? भारतीय शहरीकरण और प्रवासन की प्रवृत्ति कैसी है ? आदि प्रश्नों के उत्तर जानने हेतु इस अनुसंधान का विषय चुना गया है।

अनुसंधान निबंधो के लिए प्रयुक्त अनुसंधान विधियाँः–

वर्तमान शोध प्रबंध के लिए उपयोग की जानेवाली जानकारी और तथ्यों को विषय सें संबधित विभिन्न पत्रिकाओं, पुस्तको, लेखों, समाचार पत्रों और वेबसाइटों से संकलित किया गया है।

अनुसंधान के उदेश्यः–

प्रस्तुत शोध के मुख्य उदेद्श्य इस प्रकार है।

1) वर्तमान में भारत के शहरीकरण और प्रवासन की दिशा कैसी है इसका अध्ययन करना।
2) भारत के शहरीकरण और प्रवासन संबधित नीति के प्रभावों को जानना।
3) भारत के शहरीकरण और प्रवासनकी दिशा में होनेवाले परिर्वनों को समझना।
4) भारत के शहरीकरण और प्रवासन में गैर–अपेक्षित वृद्धि के कारणों की खोज करना।
5) भारतीय शहरीकरण ओर प्रवासन की प्रवृत्ती कैसी है इसका अध्ययन करना।

नागरिकता और प्रवासन का अर्थः–

शहरीकरण बिखरे हुए ग्रामीण क्षेत्रों में बड़ी संख्या में लोंगो का प्रवास है। जब ज्यादा से ज्यादा लोग गांव से शहर की और रूख करते है, तो वे खेती के बजाय मशीनीकरण का सहारा लेते हैं। सभ्यता की प्रकिया तब शुरू होती है जब हम अपनी आदतों को बदलते हैं और उसी के अनुसार अपने जीवन के तरीके को बदलते है। सभ्यता एक तरफा प्रक्रिया नहीं है, यह दो तरफा

प्रक्रिया है। इसमें न केवल ग्रामीण क्षेंत्रों से शहरों की और पलायन और कृषि व्यवसाय से लेकर उदयोग, व्यापार, रोजगार और व्यवसाय शामिल है, बल्कि प्रवासियों के दृष्टिकोण, विश्वास, मूल्यों और व्यवहारों में भी शामिल है।

उपरोक्त परिभाषाओं से, यह स्पष्ट है कि शहरीकरण के लिए ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में लोगों के प्रवास के साथ–साथ कृषि व्यवसाय से श्रमिकों का प्रवासन आवश्यक है। सभ्यता में सामाजिक परिवर्तन हो रहा है। एंडरसन की व्याख्या से, यह स्पष्ट है की सभ्यता को न केवल व्यवसाय में परिवर्तन की आवश्यकता है, बल्कि व्यवहार, विचार, सामाजिक मूल्यों, विश्वासों, जीवन के तरीके और व्यवहार में भी परिवर्तन की आवश्यकता है। शहरीकरण वह प्रक्रिया है जिसके दवारा उपरोक्त तत्व शहर में जीवन के तरीके अनुसार बदलते है। जब लोग एक स्थान से दुसरे स्थान पर जाते है, तो इसे प्रवासन कहा जाता है। इस प्रकार के प्रवास को सभ्यता के लिए महत्वपुर्ण माना जाता हैं। इस प्रवासन से शहरी क्षेंत्रों में कई समस्याएं पैदा हो रही है।

भारत में शहरीकरण और प्रवासन की समस्या :

नागरिकता एक सामाजिक प्रक्रिया है। यद्यपि लोग ग्रामीण सें शहरी क्षेंत्रों में पलायन करते हैं, लेकिन सामाजिक अभिसरण अधिक महत्वपुर्ण है। सामाजिक अभिसरण विचार, व्यवहार, सामाजिक मुल्यों, विश्वासों, जीवन के तरीके और व्यवहार का रूपांतरण है। औद्योगीकरण से शहरीकरण में वृद्धि होती है। सभ्यता को औद्योगीकरण का परिणाम माना जाता है। औद्योगीकरण से शहर में उद्योगों की संख्या बढ़ती है। औद्योगीक श्रमिकों की संख्या बढ़ रही है। ग्रामीण क्षेत्रों से श्रमिक शहर में रोजगार के लिए आते है। ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में नागरिक सुविधांए अधिक उपलब्ध हैं। बढ़ते औद्योगीकरण से अधिक सुविधांऐ मिलती है क्योंकी शहरी क्षेंत्रों में श्रमिकों की संख्या बढ़ जाती है। यह सभ्यता की प्रक्रिया को अधिक प्रेरणा देता है।

शहर में उद्योगों की संख्या में वृद्धि से रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ, बाजार, मनोरंजन आदि में वृद्धि होती है। शहरी क्षेत्रों में उपलब्ध सुविधाओं से ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर जनसंख्या का पलायन होता हैं। लोग ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में आकर्षित होते है। इन तत्वों को पुल तत्व कहा जाता है। ये कारक लोगों को शहर में खीचते है। शहरी क्षेत्रों में उपलब्ध नागरिक सुविधाओं के कारण ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में नागरिकों का प्रवास होता है। खींचनेवाले तत्वों के अलावा, धकेलनेवाले तत्व भी प्रवास का कारण बनते हैं। इन कारकों को प्रेरक कारक भी कहा जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी, किसान आत्महत्या आदि के कारण भी लोग ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन करते है। कृषि का आकार दिन–प्रतिदिन कम होता जा रहा है। कृषि उत्पादकता घट रही है। कृषि आय घट रही है। कृषि उत्पादन की लागत बढ़ रही है। इन सभी कारणों से ग्रामीण क्षेत्रों के लोग शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन कर रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिकुल आर्थिक स्थिती लोगों को शहरों में जाने के लिए प्रेरित करती है। यह स्थिती उन्हें शहर की ओर धकेलती है। इसलिए, इन कारकों को पुश कारक कहा जाता है।

सभ्यता एक आधुनिक प्रकिया है। यदि आप पुरी दुनिया के बारे में सोचते है, तो आप पाएगें कि प्राचिन समय में कई शहर मौजूद थे। लेकिन उस समय सभ्यता की प्रकिया शुरू नहीं हुई थी। प्राचीन काल में लोग ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में स्थायी रूप से प्रवास नही करते थे। पश्चिम में इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के बाद सभ्यता शुरू हुई। इससे हम कह सकते हैं कि सभ्यता एक आधुनिक प्रकिया है। आज, दुनिया के सभी देशों में सभ्यता शुरू हो गई है। आज सभ्यता वैश्विक हो गई है। सभ्यता के लिए बुनियादी सुविधाओं की आवश्यकता है। इसमें परिवहन के आधुनिक साधन शामिल है। मोटर, रेल, वायु, और जहाज परिवहन को विकसित किया जाना चाहिए। आधुनिक समय में बड़े शहरों में ट्रैफिक जाम का सामना करना पड़ रहा है। इसे हटाने के लिए मेट्रो रेल का निर्माण किया जा रहा है। सभ्यता के लिए संचार के आधुनिक साधनों के विकास की आवश्यकता है। इनमें पोस्ट ऑफिस, टेलीफोन, मोबाईल, इंटरनेट, ई–मेल,

टेलीविजन, फेसबुक, फैक्स आदि शामिल है। इन उपकरणों के साथ, संचार बहुत कम समय में और बहुत कम लागत पर होता है। शहर में ऑनलाइन बैकिंग सुविधाएं उपलब्ध है।

शहर के बुनियादी ढांचे में एक नियमित पानी की आपुर्ति शामिल है। शहर के सभी नागरिकों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध होना चाहिए। एक भूमिगत जल निकासी व्यवस्था होनी चाहिए। सीवेज सुविधांए नागरिकों के स्वास्थ की सुविधा प्रदान करती है। नियमित बिजली की आपुर्ति उपलब्ध होनी चाहिए। सड़क पर नाइट लाइट होनी चाहिए। इससे शहर में नागरिकों की सुरक्षा बढ़ जाती है। चोरी की घटना कम है। पर्याप्त शैक्षिक सुविधांए उपलब्ध होनी चाहिए। शहर में प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय स्थापित है। स्वास्थ सुविधांओं के संदर्भ में सभ्यता के लिए डॉक्टर, क्लीनिक और मेडिकल कॉलेज आवश्यक है। स्वतंत्र बाजार उपलब्ध होना चाहिए। इनमें अनाज बाजार, कपडा बाजार, सब्जी बाजार, सोना और चाँदी की दुकाने आदि शामील है। बड़े शहरों में विभन्न क्षेत्रों में ऐसे बाजार विकसित हुए है। सिनेमाघरों, उद्यानों आदि जैसे मनोरंजन के लिए शहर में सुविधांए हैं। ये सुविधांए नागरिकों को बेहतर जीवन जीने में सक्षम बनाती है। उन स्थानों पर नागरिकों का बड़ा प्रवास है जहां बुनियादी सुविधांए अधिक उपलब्ध है।

भारत में शहरीकरण की प्रकिया :

भारत की शहरी आबादी से आप सभ्यता की गति को समझ सकते है। औद्योगीकरण ने शहरीकरण की गति को तेज किया है। 1891 में, भारत में शहरी आबादी 5 प्रतिशत थी। यह 2011 में बढ़कर 31.16 फीसदी हो गया। संयुक्त राष्ट्र के एक सर्वेक्षण के अनुसार, भारत का शहरीकरण 2030 तक 40.76 प्रतिशत तक पहुँचने की उम्मीद है। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 2050 में सबसे बड़ी शहरी आबादी होगी। चुंकि शहरी आबादी बढ़ती है, इसलिए शहरों की संख्या बढ़ जाती है। 2001 की जनगणना के अनुसार, भारत में कुल शहरों की संख्या 5,161 थी। 2011 की जनगणना के अनुसार, यह बढकर 7935 हो गया। इससे स्पष्ट है कि भारत के शहरों की संख्या 10 वर्षो में 2774 बढ़ी है।

जनसंख्या की दृष्टि से, दो मुख्य प्रकार के शहर हैं जो वैधानिक शहर और जनगणना शहर की श्रेणी में आते है। ऐसा शहर जिसमें एक नगरपालिका, नगरपालिका परिषद, निगम या शिविह क्षेत्र होता है , एक वैधानिक शहर कहलाता है। ऐसे शहर को वैधता प्राप्त होती। 2001 की जनगणना के अनुसार, भारत में 3799 वैधानिक शहर थे। 2011 की जनगण्ना के अनुसार, ऐसे शहरों की संख्या 4,041 थी। 10 वर्षो में 242 द्वारा वैधानिक शहरों की संख्या में वृद्धि का मतलब है कि 10 वर्षो में 242 शहरों को वैधानिक मान्यता दी गई। जनगणना के अनुसार किसी शहर या शहर को निर्धारित करने के लिए कुछ मापदंड हैं। उन मानदंडों को पूरा करनेवाले बस्तियों को शहर या शहर कहा जाता है। 2001 की जनगणना के अनुसार, निम्नलिखित मानदंड निर्धारित किए गए थे। ए) क्षेत्र की न्यूनतम आबादी 5000 होनी चाहिए। बी) कामकाली आबादी का 75 प्रतिशत कृषि के अलावा अन्य व्यवसायों में लगा होना चाहिए। ग) प्रति वर्ग किलोमीटर जनसंख्या घनत्व। यह 400 होना चाहिए। एक शहर जो इन मानदंडढों को पूरा करता है उसे जनगणना शहरा कहा जाता है। 2001 की जनगणना शहर थे। इससे यह स्पष्ट है कि 2001 से 2011 तक के दस वर्षो में, शहर में जनगणना 2532 तक बढ़ गई।

ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में सभ्यता की गति धीमी थी। अंग्रेजो ने अपने फायदे के लिए भारत में रेल्वे और बंदरगाह विकसित किए। परिणामस्वरूप, मुंबई, पुणे, अहमदाबाद, कोलकाता, दिल्ली और मद्रास (चेन्नई) जैसे प्रमुख शहरों का विस्तार हुआ। इस शहर की आबादी बढ़ गई। 2011 की जनगणना के अनुसारन, मुंबई सबसे बड़ा शहर है। शहर की आबादी 1.84 करोड थी। दिल्ली दूसरे, कोलकाता तीसरे और चेन्नई चौथे स्थान पर थी। 2011 में, भारत में एक करोड से अधिक आबादी वाले तीन शहर थे। दस लाख से अधिक आबादी वाले 19 शहर

थे। 2011 की जनगण्ना के अनुसार, भारत में एक लाख से अधिक आबादी वाले 497 शहर थे। 2011 में नागपूर भारत का 13 वा सबसे अधिक आबादी वाला शहर था।

भारत में शहरीकरण की प्रवृत्ति :

1901 में, भारत की 10.84 प्रतिशत आबादी शहरी क्षेत्रों में रहती थी। 1911 में शहरी क्षेत्रों में रहनेवाली कुल जनसंख्या में वृद्धि हुई। हालांकि, शहरी आबादी का अनुपात घटकर 10.29 फीसदी हो गया। 1921 में, भारत की कुल जनसंख्या में थोड़ी गिरावट आई। लेकिन शहरीकरण की दर बढ़करन 11.18 फीसदी हो गई। 1931 में, शहरी आबादी बढ़कर 11.99 प्रतिशत हो गई। 1994 में, शहरी आबादी 13.97 प्रतिशत की तुलना में उच्च दर से बढ़ी 1951 में शहरी आबादी बढ़कर 17.30 प्रतिशत हो गई। 1961 में शहरी आबादी में बहुत कम वृद्धि हुई थी। यह 17.97 फीसदी था। 1971 में, शहरी आबादी बढ़कर 19.91 प्रतिशत हो गई। 1981 में, शहरी आबादी तेजी से बढ़ी। यह 23.33 प्रतिशत था। 1991 में. शहरी आबादी का अनुपात बढ़कर 25.71 प्रतिशत हो गया। 2001 में, शहरी आबादी 27.80 प्रतिशत बढ़ी। 2011 की जनगणना के अनुसार, शहरी आबादी 31.16 प्रतिशत थी। 1911 के अपवाद के साथ, भारत की शहरी आबादी लगातार बढ़ रही है। 1901 की तुलना में 1971 से 2011 तक 40 वर्षो में शहरी आबादी तीन गुना हो गई। इसका मतलब है िकइस अवधि के दौरान सभ्यता की गति में वृद्धि हुई। इसका मुख्य कारण शहर में लगातार बढ़ती नागरिक सुविधाएं, रोजगार के अवसर और औद्योगीकरण की वृद्धि है।

2011 में, महाराष्ट्र की जनसंख्या 11.24 करोड थी। 2001–11 के दशक में, महाराष्ट्र की जनसंख्या में 19 प्रतिशत की वृद्धि हुई। उत्तर प्रदेष के बाद भारत में महाराष्ट्र की दूसरी सबसे बड़ी आबादी है। 1961 से 1991 के तीस वर्षो के दौरान, महाराष्ट्र की जनसंख्या सामान्य रूप से दोगुनी हो गई। 1961 में महाराष्ट्र का जनसंख्या घनत्व प्रति वर्ग कि.मी. यह 129 कि.मी. था और 2011 में बढ़कर 365 हो गा। 1961 में, महाराष्ट्र की शहरी आबादी 28.28 प्रतिशत थी। महाराष्ट्र में शहरीकरण की दर लगातार बढ़ रही है। 1971 में यह बढ़कर 31.15 प्रतिशत हो गया। 1981 में शहरीकरण की दर 35.03 प्रतिशत थी और 1991 में बढ़कर 38.66 प्रतिशत हो गई। 2001 में, यह 42.41 प्रतिशत था। महाराष्ट्र में शहरी आबादी का अनुपात 2011 में बढ़कर 45.23 प्रतिशत हो गया।

2001 में, यह 378 था। 2011 की जनगणना के अनुसार, महाराष्ट्र में शहरों की संख्या 535 थी। जनसंख्या के अनुसार, शहरों को छह समूहों ए, बी, सी, डी, ई, एफ में वर्गीकृत किया गया है। महाराष्ट्र तमिलनाडु और केरल के बाद शहरीकरण के मामले में भारत में तीसरे स्थान पर है। ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में प्रवास के कारण जनसंख्या बढ रही है। महाराष्ट्र में, पलायन के कारण जनसंख्या वृद्धि की दर नासिक, बृहन्मुंबई, पुणे और नागपूर में अधिक है।

भारत में जनसंख्या प्रवासन :

ज्नसंख्या प्रवास शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या में वृद्धि कर रहा है। 1991 से 2001 के बीच, भारत में 9.76 करोड़ की आबादी थी। प्रवास चार प्रकार के होते है। इस ग्रामीण–ग्रामीण मोड में, लोग एक गांव में दूसरे गांव में जाते है। 1991 से 2001 के बीच 5.34 करोड़ लोग ग्रामीण इलाकों से पलायन कर गए। यदि लोग ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में जाते हैं, तो इसे ग्रामीण–शहरी प्रवास कहा जाता है। इस प्रकार के प्रवास को सभ्यता के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। इस प्रवासन से शहरी क्षेत्रों में कई समस्याएं पैदा हो रही हैं। उपरोक्त अवधि के दौरान, ग्रमीण से शहरी क्षेत्रों में प्रवास 2.06 करोड था। यदि लोग एक शहर से दूसरे शहर जा रहे हैं, तो इसे शहर से शहर में प्रवास कहा जाता है। इसी अवधि के दौरान, ऐसा प्रवासन 1.44 करोड था। जब लोग शहर से गांव की ओर पलायन करते हैं तो इसे शहर से गांव में प्रवास कहा जाता है। इसी अवधि के दौरान, ऐसे पलायन की संख्या 63 लाख थी। उपरोक्त अवधि में, 3 मिलियन

लोगों ने प्रवासन के बाद अपने ठिकाने का उल्लेख नहीं किया। पलायन से जनसंख्या प्रभावित होती है।

भारत के 34 प्रमुख शहरों को देखतु हुए, यह पाया गया कि 1991–2001 के दौरान जनसंख्या में 46.2 प्रतिशत की वृद्धि 77.7 प्रतिशत थी। प्रवास के कारण जनसंख्या में 50 प्रतिशत से अधिक वृद्धि वाले शहरों में लुधियाना, सूरत, नासिक, ग्रेटर मुंबई, पुणे, विजयवाडा फरीदाबाद, नागपूर और विशाखापत्तनम थे। 1991 से 2001 तक बैंगलोर, दिल्ली, भोपाल, चेन्नई, हैदराबाद और राजकोट में प्रवासी जनसंख्या वृद्धि का 40 से 50 प्रतिशत हिस्सा था। कोलकाता, अहमदाबाद, लखनऊ, धनबाद, जयपुर, मदुरै, जबलपुर और इंदौर उन शहरों में से हैं, जहां प्रवासन के कारण उपरोक्त अविधि में जनसंख्या 30 प्रतिशत से बढ़कर 40 प्रतिशत हो गई है। पटना, वाराणसी, मेरठ, कानपुर, इलाहाबाद और कोयम्बटून ऐसे शहर हैं, जिनमें 1991 से 2001 तक 20 से 30 प्रतिशत प्रवासी जनसंख्या वृद्धि हुई है। अमृतसर (18.5%), आसनसोल (18.2%) और आगरा शहर (9.2%) का सबसे कम हिस्सा है। उपरोक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि जनसंख्या वृद्धि में प्रवासन सबसे प्रभावशाली कारक है।

प्रवासन के कारण :

भारत में प्रवासन के निम्नलिखित कारण हैं। 1) रोजगार 2) व्यवसाय 3) शिक्षा 4) विवाह 5) जन्म के बाद 6) पारिवारिक कारण और अन्य कारण हैं। इन कारणो से प्रवासन की सीमा एक शहर से दूसरे शहर में भिन्न होती है। 1991 और 2001 के बीच, भारत में रोजगार प्रवासन 32.6 प्रतिशत था। लुधियाना में भारत में रोजगार के लिए प्रवासन दर 47.4 प्रतिशत है। ग्रेटर मुंबई (39.6%), बैंगलोर (38.7%), दिल्ली (36.9%), हैदराबाद (35.2%), कोयंबटूर (33. 6%) और सुरतत (33.6%)। 1991 और 2001 के बीच, भारत में व्यापार का प्रवासन 2% था। राजकोट में, व्यापार प्रवास 14.0 प्रतिशत था। सूरत में 8.3 फीसदी, अहमदाबाद में 7 फीसदी, कोलकाता में 2.5 फीसदी, आसनसोल में 2.3 फीसदी, विजयवाडा में 2.4 फीसदी, हैदराबाद में 3. 3 फीसदी और विशाखापत्तनम में 3.1 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई। विचाराधीन बाकी शहरों में यह 2 फीसदी से भी कम था।

1991 से 2001 के बीच, भारत में शिक्षा का प्रवास 3.8 प्रतिशत था। इलाहाबाद में 34.6 फीसदी, वारणसी में 18.7 फीसदी, मदुरै में 12 फीसदी, विजयवाडा में 8.7 फीसदी, नागपूर और भोपाल में 6.7 फीसद, लखनऊ में 7.6 फीसदी इंदौर में 7.4 फीसद, जबलपूर में 7.7 फीसदी और कोयम्बटूर में 6.5 फीसद की गिरावट आई है। प्रतिशत पुणे, 5.9 प्रतिशत, हैदराबाद 5.9 प्रतिशत कानपुर 5.4 प्रतिशत, अमृतसर 5.1 प्रतिशत, चेन्नई 5.00 प्रतिशत विशाखापत्तनम और जमशेदपुर 4.1 प्रतिशत, धनाबद 4 प्रतिशत था।

1991 और 2001 के बीच, भारत में शादी का प्रवासन 16.5 प्रतिशत था। आसनसोल में 44.8 फीसद, धनबाद में 30.7 फीसद, जमशेदपुर में 26.3 फीसद, मेरठ में 24.8 फीसद, कोच्चि में 25 फीसद, अमृतसर में 24.7 फीसद, जबलपूर में 22.8 फीसद, नागपूर में 21.8 फीसद और आगारा में 21.4 फीसद कोलकाता और इंदौर में 21.1 फीसद मतदान हुआ। प्रतिशत, भोपाल 20 प्रतिशत, राजकोट 19.5 प्रतिशत, अहमदाबाद 19.4 प्रतिशत, वारणसी 18.5 प्रतिशत, मदुरै 18.3 प्रतिशत, पटना 18.2 बैंगलोर 17.2 प्रतिशत और विजयवाडा 16.9 प्रतिशत रहा। अन्य सभी शहरों में यह राष्ट्रीय औसत से कम था।

1991 से 2001 के बीच, भारत में जन् दर 5.7 प्रतिशत थी। नासिक में 13.9 फीसदी, पुणे में 10.5 फीसदी, ग्रेटर मुंबई में 9 फीसदी, कोच्चि में 8.6 फीसदी, अहमदाबाद और सूरत में 8.3 फीसदी, राजकोट में 7.7 फीसदी और नागपूर में 6.5 फीसदी मतदान हुआ। अन्य शहरों में यह राष्ट्रीय औसत से कम था। 1991 से 2001 के बीच, भारत में घरेलू प्रवास 29.7 प्रतिशत था। 1991 और 2001 के बीच, भारत में प्रवासन अन्य कारणों से 9.7 प्रतिशत था।

भारत में प्रवासन की प्रकृति :

प्रवासन तीन प्रकार का होता है। अ) राज्य के भीतर ब) राज्य से बाहर और क) देश से बाहर। भारत में, एक पूरे के रूप में, इंट्रा–स्टेट प्रवासन 1991 से 2001 तक 7 प्रतिशत, राज्य के बाहर 51.5 प्रतिशत और देश के बाहर 1.5 प्रतिशत था। कानपुर, जसनुी, लखनऊ, पटना, भोपाल, इंदौर, कोयम्बटूर, सूरत, कोच्चि, विशाखापत्तनम, आगरा, वाराणसी, मेरठ, नासिक, अमृतसर, जबलपुर, आसनसोल, इलाहाबाद, विजयवाडा और पानी राजकोट में राष्ट्रीय औसत से अधिक प्रवासन हुआ।

1991 से 2001 के बीच, मदुरै में प्रवास की दर 95.3 प्रतिशत थी। दिल्ली को छोड़कर, फरीदाबाद में सबसे कम अंतर–राज्यीय पलायन 14.6 प्रतिशत था। 83.6 प्रतिशत पर फरीदाबाद शहर में आउट–ऑफ–स्टेट प्रवासन सबसे अधिक था। राज्य के बाहर सबसे कम प्रवास विजयवाड़ा में 4.5 प्रतिशत पर था। राष्ट्रीय औसत की तुलना में बृहन्मुंबई, दिल्ली, लुधियाना, जमशेदपुर, धनबाद और फरीदाबा में राज्य का प्रवासन अधिक था। सबसे ज्यादा प्रवास कोलकाता में 6.6 फीसदी और सबसे कम 0.1 फीसदी रहा। राष्ट्रीय औसत से बाहर प्रवासन कोलकाता, दिल्ली, लूधियाना, वाराणसी, फरीदाबाद और अमृतसर में अधिक था।

निष्कर्ष :–

अध्ययन में पाया गया कि जनसंख्या वृद्धि राज्य के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। जनसंख्या भोजन, षिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, प्रति व्यक्ति आय, परिवहन के साधन, जीवन स्तर, आदि की उपलब्धता को प्रभावित करती है। जनसंख्या में वृद्धि के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में औद्योगीकरण और ढांचागत विकास एक आवष्यक है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर भी बढते है। ग्रामीण क्षेत्रों में बेहतर शिक्षा, परिवहन, स्वच्छता, स्वास्थ्य सेवा, सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए। शहरीकरण का अर्थ समाज का परिवर्तन है जिससे ग्रामिण संस्कृति आधुनिक शहरी संस्कृति में बदल रही है। शहरीकरण समग्र शहरी आबादी को आर्थिक और सामाजिक विकास का आनंद लेने की अनुमति देता है।

ग्रंथ सूची :–

1. प्रा. राहुल वाघमारे, भारतीय अर्थव्यवस्था, यूनिवर्सल लक्ष्य पुणे, नवंबर 2013.
2. प्रा. शशिकांत हरि अटवलकर, भारतीय अर्थव्यवस्था, शेठ प्रकाशन 2009.
3. भारतीय अर्थव्यवस्था, रूद्रदत्त एव।के. पी. एम. सुंदरम, एस. चॉद एंड कंपनी, नई दिल्ली (हिन्दी).
4. भारतीय अर्थव्यवस्था, रमेश सिंह, म्यकग्रेव एजुकेशन प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई, 7 वां संस्करण.
5. The Indian Economy- Sanjiv Verma, Unique Publication, Jan 2013.
6. Indian Economy – Misra & Puri, Himalaya Publishing House, Mumbai, 2010.
7. समाचार पत्र : लोकमत, नवभारत, टाईम्स ऑफ इंडिया.
8. https://in.one.un.org/poverty-and-urbanisation-area/
9. http://www.vivacepanorama,com/migration/
10. https://prabhatkhabar.comn/news/91401
11. https://hindi.indiawaterportal.org/content/kaaisae-raokaen-gaanvaon-sae-palaayana/content-type-page/47984.